इकाई 4 अर्थशास्त्र में व्याख्या के प्रतिरूपों पर बहस

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 प्रतिष्ठित राजनीतिक अर्थशास्त्र एवं रिकार्डो की विधि

- 4.2.1 रिकार्डो की विधि
- 4.2.2 एन. डब्ल्यू. सीनियर
- 4.2.3 जे. एस. मिल
- 4.2.4 जे. ई. केयर्नस
- 4.2.5 जे. एन. कीन्स

4.3 रॉबिन्स, प्रत्यक्षवाद एवं अर्थशास्त्र में निगमनवाद

4.4 हचीसन एवं अर्थशास्त्र में तार्किक इन्द्रियानुभविकतावाद (Logical Empiricism)

4.5 मिल्टन फ्रीडमैन और अर्थशास्त्र में करणवाद

- 4.5.1 विज्ञान का लक्ष्य
- 4.5.2 सिद्धांत के महत्त्व एवं मान्यताओं की वास्तविकता के बीच संबंध
- 4.5.3 फ्रीडमैन के करणवाद का आलोचनात्मक मूल्यांकन

4.6 पॉल सैम्युल्सन एवं संक्रियावाद

- 4.6.1 संक्रियावाद
- 4.6.2 वर्णनात्मकवाद

4.7 सिद्धांत-मान्यताओं पर अर्थशास्त्र में बहस – एक विहंगम दृष्टि

4.8 अर्थशास्त्र में व्याख्या की विषमजातीयता पर अभर्त्य सेन

- 4.8.1 अर्थशास्त्र में पदार्थ एवं विधियों की विषमजातीयता
- 4.8.2 परीक्षण एवं जाँच
- 4.8.3 मूल्य निर्णयन एवं कल्याणकारी अर्थशास्त्र
- 4.8.4 औपचारीकरण एवं गणित

4.9 सारांश

4.10 शब्दावली

4.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.12 बोध प्रश्नों के उत्तर या संकेत

4.0 उद्देश्य

अर्थशास्त्र में व्याख्या को प्रत्यक्षवादी विज्ञान के प्रतिरूपों के निकट लाने के लिए चली चर्चा की वृहद् ऊँचाइयों एवं गहराइयों का चित्रण करना ही इस इकाई का लक्ष्य है। व्याख्या के प्रत्यक्षवादी प्रतिरूपों की तर्ज पर अर्थशास्त्र में व्याख्या को ढालने पर अर्थशास्त्र में विधिपरक नोक-झोंक बड़े पैमाने पर चलती रही है। लेकिन अर्थशास्त्र की विषयवस्तु प्रत्यक्षवाद के नियमों के अनुप्रयोग हेतु उस सीमा तक आसानी से परीक्षणीय नहीं है जितनी कि भौतिक विज्ञानों की होती है। इस इकाई के अध्ययनोपरान्त आप :

- प्रत्यक्षवाद की व्याख्या के प्रतिरूप को अपनाने में मुख्यधारा के अर्थशास्त्रियों द्वारा किए गए प्रयासों को बता सकेंगे;
- व्याख्या के 'वैज्ञानिक' प्रतिरूपों को अपनाने में आने वाली सीमाओं, कठिनाइयों तथा अंतरों की व्याख्या कर सकेंगे; और
- अर्थशास्त्र में व्याख्या की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

राजनीतिक विज्ञान पर अर्थशास्त्र को भौतिक विज्ञानों की तर्ज पर एक विज्ञान बनाने की लालसा प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों से भी काफी पहले से रही है। डेविड रिकार्डो ने दावा किया था कि राजनीतिक विज्ञान के सिद्धांत उतने ही सही और सटीक थे जितने कि गुरुत्वाकर्षण के नियम। यद्यपि रिकार्डो ने व्याख्या के प्रतिरूपों या विधियों पर बहुत कुछ नहीं लिखा, तथापि राजनीतिक अर्थशास्त्र पर उसके सिद्धांत अमूर्त– निगमनात्मक–सोच में परिलक्षित होते हैं जिसे बाद में राजनीतिक विज्ञान को आधारभूत विधि मान लिए जाने का दावा किया गया। रिकार्डो की 'सोचने की आदत' काफी कुछ व्याख्या के प्राक्कल्पनावादी–निगमनात्मक प्रतिरूप से मिलती–जुलती थी जिसने प्रतिष्ठित सम्प्रदाय के लेखकों को राजनीतिक अर्थशास्त्र को एक विशुद्ध विज्ञान के रूप में रखने जैसी विधि को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। हम अपनी चर्चा राजनीतिक विज्ञान एवं रिकार्डवादी परम्परा में व्याख्या की विधि एवं प्रकृति जो एन.डब्ल्यू. सीनियर, जे.एस.मिल, जे.ई. केयर्नस तथा जे.एन. कीन्स के लेखन में परिलक्षित हुई। हम विभिन्न दृष्टिकोणों की संक्षिप्त व्याख्या के साथ प्रारंभ करेंगे।

उसके बाद हम लिओनेल रॉबिन्स के विचारों पर चर्चा करेंगे जिसने अर्थशास्त्र को विशुद्ध प्रत्यक्षवादी विज्ञान माना ताकि इसकी व्याख्या के लिए निगमनवाद की विधि को अपनाने पर बल दिया। उसके बाद टी. हचीसन के इन्द्रियानुभविकतावाद पर जोर देने की विवेचना करेंगे कि क्या अर्थशास्त्र वास्तव में एक विज्ञान कहलाने योग्य है। अगले दो खंडों में मिल्टन फ्रीडमैन के 'उपकरणवाद' (Instrumentalism) तथा पॉल सैम्युल्सन के 'परिचालनवाद' (Operationalism) पर चर्चा करके यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि वर्तमान समय में अर्थशास्त्र की मुख्य धारा के विचार इसे किस ओर ले जाते हैं। संपूर्ण चर्चा के दौरान, सारा ध्यान इन उपागमों (Approches) की सीमाओं तथा तद्र्थ उपायों पर केंद्रित रहेगा जिनके द्वारा समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास किया गया।

यद्यपि यह इकाई प्रत्यक्षवादी मुख्य धारा में अर्थशास्त्र की व्याख्या तक सीमित रहेगी, तथा अंत में व्याख्या की वैकल्पिक विधियों पर भी संक्षिप्त चर्चा की जाएगी ताकि अर्थशास्त्र में व्याख्या की विधियों की बहुलता की संभाव्यता के बारे में जानकारी दी जा सके।

4.2 प्रतिष्ठित राजनीतिक अर्थशास्त्र तथा रिकार्डो की विधि

4.2.1 रिकार्डो की विधि

एडम स्मिथ द्वारा आर्थिक जाँच की सही विधि पर कहीं भी चर्चा नहीं की गयी। विधि के प्रति स्मिथ की सोच जैसा कि बाद के अर्थशास्त्रियों द्वारा विश्लेषण किया गया, कुछ-कुछ पेचीदी थी। ऐसे उदाहरण हैं जो यह बताते हैं कि वह पहला अर्थशास्त्री था जिसने राजनीतिक को निगमनात्मक विज्ञान के स्तर तक पहुँचाया। लेकिन यह भी सच है कि उनके लेखन में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो उसे आगमनात्मक ऐतिहासिक विधि का जनक सिद्ध करते हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी समग्र रूप से एडम स्थिम की सोच किसी प्रत्यक्षवादी व्याख्या के गुणों

से दूर ले जाते हुए नैतिक एवं नीतिपरक होने की ओर इंगित करती है। इन्हीं समस्त कारणों से, प्रतिष्ठित राजनीतिक की विधि के मुद्दे पर, डेविड रिकार्डों की ओर अनिवार्य रूप से झुकना पड़ता है। रिकार्डों ने अर्थशास्त्र की विधि पर कुछ भी नहीं लिखा है। तथापि राजनीतिक के सिद्धांतों की व्याख्या की उसकी विधि स्पष्टतः प्रत्यक्ष, निरपेक्ष एवं निगमनात्मक प्रतीत होती है और इसे व्याख्या का 'प्राक्कल्पनावादी-निगमनात्मक प्रतिरूप' कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि तथ्य अपने बारे में स्वयं बोलते हैं और सिद्धांत का कुछ न कुछ अर्थ होता है। रिकार्डों के उपरांत राजनीतिक को विज्ञान के रूप में माने जाने का दावा यथावत बना रहा। राजनीतिक पर उसके सिद्धांत, जो कि निगमनात्मक विवेचना पर आधारित नियमों का एक समुच्चय था, उसके दावे की सच्चाई को आगे बढ़ाते हैं। लेकिन उनके उपरान्त यह प्रश्न उठाया गया कि अनुभवजन्य परीक्षण के बिना नियमों का निगमनात्मक स्वरूप किसी विषय को विज्ञान का दर्जा दिला सकता है। रिकार्डों की विधि तथा राजनीतिक को एक विज्ञान के रूप में स्थापित करने के उसके दावे का बचाव करने का कार्य प्रतिष्ठित राजनीतिक के उसके अनुयायियों पर छोड़ दिया गया। एन.डब्ल्यू. सीनियर, जे.एस.मिल, जे.ई.केयनर्स तथा जे.एन. कीन्स ने अपने लेखों में डेविड रिकार्डों के उपागम का काफी सशक्त तरीके से बचाव किया।

4.2.2 एन. डब्ल्यू. सीनियर

एन.डब्ल्यू. सीनियर ने 1927 के अपने एक व्याख्यान में, जिसे बाद में विस्तार से **'आउटलाइन ऑफ दी साइन्स ऑफ पॉलिटीकल इकनॉमी (1936)'** शीर्षक दिया गया, पहली बार एक कठोरतापूर्वक वास्तविक विज्ञान तथा अशुद्ध और अंतनिर्हित रूप आदर्शात्मक कला के बीच भेद किया। उन्होंने रिकॉडर्यिन सैद्धांतिक व्यवस्था के वैज्ञानिक होने का दावा किया। उनके अनुसार, राजनीतिक का विज्ञान ''थोड़ी सी सामान्य प्रतिज्ञप्तियों पर ठहरता है जो कि अवलोकनों एवं चेतनावस्था का परिणाम है और जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति, उनके बारे में पता चलते ही, उन्हें अपने अनुकूल विचार मानते हुए स्वीकार करता है।'' इससे निष्कर्ष निकाले जाते हैं जो 'कतिपय विशिष्ट विघटनकारी कारणों' की अनुपस्थिति में सही ठहरते हैं।

सीनियर ने राजनीतिक की इन थोड़ी-सी सामान्य प्रतिज्ञप्तियों को कम करके निम्नलिखित चार तक सीमित कर दिया।

1) प्रत्येक व्यक्ति **यथाशक्ति कम से कम त्याग करके अपनी संपत्ति को अधिकतम** करना चाहता है;

2) जीवित रहने के साधनों की अपेक्षा जनसंख्या में बढ़ने की प्रवृत्ति पायी जाती है;

3) मशीनों से काम करने वाला श्रमिक धनात्मक निबल उत्पाद उत्पादित करने में सक्षम है; एवं

4) कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है।

4.2.3 जे. एस. मिल

सीनियर ऐसे पहले अर्थशास्त्री थे जिन्होंने 'आर्थिक मानव' या 'अधिकता करने वाला मानव' की अवधारणा प्रस्तुत की जैसा कि उनके द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त पहली प्रतिज्ञप्ति से पता चलता है। आगमनात्मक विधि के कट्टर समर्थक तथा विज्ञान में विधिमूलक एकतत्ववाद का बचाव करने वाले जे.एम.मिल रिकार्डों के राजनीतिक अर्थशास्त्र की निगमन विधि के प्रति उदारता का भाव रखते थे। मिल ने अपने निबंध – ***ऑन दी डेफीनीशन ऑफ पॉलिटीकल इक्नॉमी एण्ड ऑन दी मेथड ऑफ इन्वेस्टीगेशन प्रोपर टु इट (1936)*** में राजनीतिक को एक अयथार्थ (inexact) विज्ञान तथा एक 'पृथक विज्ञान' मानते हुए अर्थशास्त्र में निगमन विधि का बचाव किया। सीनियर की 'आर्थिक मानव' की अवधारणा

की और अधिक व्याख्या करते हुए मिल ने लिखा, ''राजनीतिक ..... यह मानते हुए आगे बढ़ती है कि मानव, अपनी प्रकृति की आवश्यकता के अनुरूप प्रतिबद्ध है कि सभी मामलों में एक छोटे से हिस्से के बजाय संपत्ति का एक बड़ा अनुपात पसन्द करता है।'' राजनीतिक की प्रतिज्ञप्ति को सुविधाजनक बनाने के लिए मिल ने 'आर्थिक मानव' को एक काल्पनिक मानव के रूप में स्वीकार नहीं किया। मिल के निबंध में 'आर्थिक मानव' पर पृष्ठों के ठीक बाद राजनीतिक को ''अनिवार्यतः एक अमूर्त विज्ञान'' के रूप में निरूपित किया गया है जो '*पूर्ववर्ती अनुभव की विधि*' का प्रयोग करता है। राजनीतिक में '*हलचल मचाने वाले कारण*' (Disturbing Causes) तथा 'नियमों की प्रवृत्ति' यदि अन्य बातें पूर्ववत् रहें' (Ceteris paribus) वाक्यांश की अनिवार्यता को बढ़ा देती हैं।

4.2.4 जे. ई. केयर्नस

करैक्टर एण्ड लॉजीकल मैथड ऑफ पॉलिटिकल इकनॉमी नामक अपने लेख में केयर्नस ने तर्क दिया कि राजनीतिक अर्थव्यवस्था एक प्राक्कल्पनावादी निगमनात्मक विज्ञान है और इसके निष्कर्ष 'तथ्यों के साथ उसी दशा में मेल खाते हैं जबकि गड़बड़ी पैदा करने वाले कारण अनुपस्थित रहें। इसका अर्थ यह हुआ कि वे वास्तविक सत्य की बजाय प्राक्कल्पनावादी सत्य का ही प्रतिनिधित्व करते हैं।' उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में राजनीतिक अर्थव्यवस्था की विधि पर बहस बढ़ चली थी। जे.एन. कीन्स ने यह तर्क देने का प्रयास किया कि राजनीतिक अर्थव्यवस्था में जिसे निगमनात्मक विवेचना के रूप में संदर्भित किया जाता है– वह वास्तव में मानव व्यवहार के अवलोकन पर आधारित आगमनात्मक निष्कर्ष के बाद की स्थिति है।

4.2.5 जे. एन. कीन्स

जे.एन. कीन्स ने अपने निबन्ध '*दी स्कोप एण्ड मेथड ऑफ पॉलिटीकल इकनॉमी* (1980)' में यह तर्क दिया कि निगमनात्मक विवेचना वास्तव में ठोस अवलोकनों के बाद उत्पन्न हुई। निगमनात्मक विवेचना विशिष्ट व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर बाद में विकसित हुई। जे. एन. कीन्स को प्रतिष्ठित विधिमूलक उपागमों में एक विस्तृत समझौता कराने वाले विचारक के रूप में जाना जाता है।

अर्थशास्त्र जैसे जटिल विषय में विद्यमान विधिमूलक उपागमों के बारे में उनकी समग्र समझ को निम्नलिखित अवलोकन से समझा जा सकता है। कीन्स ने पाया कि 'आर्थिक विज्ञान का वास्ता ऐसी घटनाओं से पड़ता है जो अधिक जटिल हैं और प्राकृतिक विज्ञानों से संबंधित घटनाओं की तुलना में कम सार्वभौमिक हैं। इनके निष्कर्षों में, अपने सर्वाधिक अमूर्त रूप के सिवाय सुनिश्चितता तथा सार्वभौमिकता दोनों, जो कि भौतिक नियमों से संबंधित है, नहीं पाए जाते। आर्थिक अध्ययन की उचित विधि के बारे में संगत कठिनाई पायी जाती है और आर्थिक विवेचना की वैधता की पूर्व शर्तों तथा सीमाओं को परिभाषित करने की समस्या एक विशिष्ट जटिलता बन जाती है। इतना ही नहीं, अन्य विधियों को बाहर रखकर किसी एक विधि को प्रकाश में लाना लगभग असंभव है। **उपलब्ध सामग्री, खोज की पहुँच का चरण तथा दृष्टिगोचर होने वाले लक्ष्य के अनुसार विभिन्न विधियाँ उचित हैं, और इसलिए इनमें से प्रत्येक को उसका वैधानिक स्थान तथा सापेक्षिक महत्त्व दिलाने के विशिष्ट कार्य की स्थिति उत्पन्न होती है।**'' इसे विधिमूलक बहुलतावाद के घोषणा पत्र, जिसे कि अर्थशास्त्र के लिए उचित माना जाने लगा है, के रूप में आज भी पढ़ा जा सकता है। इस पहलू पर आगे भी विचार किया जाएगा जब हम आर्थिक विधि के बारे में अमर्त्य सेन के विचार जानेंगे।

बोध प्रश्न 1

1) व्याख्या की रिकार्डों की विधि के अभिलक्षणों की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) रिकार्डों प्रणाली के वैज्ञानिक दर्जे के समर्थन में एन.डब्ल्यू. सीनियर द्वारा प्रतिपादित प्रतिज्ञप्तियों को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

3) विधिमूलक बहुलतावाद क्या है?

.....

.....

.....

.....

4.3 रॉबिन्स, प्रत्यक्षवाद एवं अर्थशास्त्र में निगमनवाद

लियोनल रॉबिन्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *एन ऐसे ऑन दी नेचर एण्ड सिगनीफिकैन्स ऑफ इकनॉमिक साइन्स* (सम्पादन 1935) में बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल के आर्थिक विचारों में प्रभावी प्रणालीतंत्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जो विषयनिष्ठतावाद, प्रणालीतंत्रीय व्यक्तिवाद एवं आर्थिक सिद्धांत के बुनियादी अभ्युपगमों की स्वयं-साक्ष्य प्रकृति पर बल देता था। उसका उद्देश्य ऐतिहासिक एवं सांस्थानिक सम्प्रदायों की ओर से उठायी गयी उन आपत्तियों एवं आलोचनाओं का उत्तर देना था जो यह कहती थीं कि बुनियादी आर्थिक प्रतिज्ञप्तियाँ परिमाणीकरण लायक नहीं थीं, इसलिए वे परीक्षण योग्य नहीं थीं और इसीलिए अर्थशास्त्र के विज्ञान कहलाने लायक नहीं थीं। इन प्रतिज्ञप्तियों में प्रमुख रूप से यह मान्यता शामिल थी कि किस प्रकार यथार्थ में विश्व के लोग वस्तुओं की सीमितता को महसूस करते थे तथा किस प्रकार अपनी प्राथमिकताओं के क्रम को संजोते थे। अनुभव के ये सार्वभौमिक तथ्य थे। रॉबिन्स ने आर्थिक सिद्धांत में प्रयुक्त किए गए शब्दों की प्रस्थिति का सुसंगत लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। मौलिक मान्यताओं को पूरक प्राक्कल्पनाओं से जोड़ा गया जो सिद्धांत को वास्तविक परिस्थितियों में लागू करने में हमारी सहायता करती हैं।

रॉबिन्स के लिए विवेकशीलता का अर्थ केवल व्यक्ति के व्यवहार अधिकतम करने तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह चयन की सुसंगतता को भी शामिल करता है। चयन की सुसंगतता के रूप में विवेकशीलता का उल्लेख इस रूप में किया जाता है कि यदि B की तुलना में A पसंद किया जाता है और C की तुलना में B, तो सुनिश्चित तौर पर C की तुलना में A पसंद किया जाएगा। रॉबिन्स ने जोर देकर कहा कि अर्थशास्त्र में विवेकशील व्यवहार की मान्यता तथा पूर्ण दूरदर्शिता 'व्यष्टिहेतुक विधियाँ' (Expository devices) हैं। वे यथार्थवादी मान्यताएँ

नहीं हैं। रॉबिन्स के अनुसार, अल्पकालिक भविष्यवाणियों तथा संभावित प्रकृतियों हेतु इन्द्रियानुभविक अध्ययन किए जा सकते हैं, लेकिन वे इन्द्रियानुभविक नियमों (empirical laws) के अन्वेषण हेतु आधार प्रदान नहीं करते। यथार्थवादी (अनुभवजन्य) अध्ययनों के उचित उपयोग तीन ही हैं : किन्हीं ठोस परिस्थितियों में सैद्धांतिक निर्माणों की अनुप्रयोगता को नियंत्रित करना; मौलिक सामान्यीकरण के साथ प्रयुक्त किए जा सकने वाले सहायक अभ्युपगमों का सुझाव देना तथा ऐसे क्षेत्रों को प्रकाश में लाना जहाँ विशुद्ध सिद्धांत नए सिरे से बनाए और विस्तारित किए जा सकें।

अर्थशास्त्र में प्रयुक्त किए जाने वाले अनुभवों से जन्में विशुद्ध अभ्युपगमों के आधार जिनके परीक्षण की आवश्यकता नहीं होती पर जोर दिए जाने के कारण रॉबिन्स को आस्टियन सम्प्रदाय के अनुभव निरपेक्षवादी सत्यों पर आधारित अभ्युपगमों से व्युत्पन्न होते हैं और इसलिए उनके परीक्षण की कोई आवश्यकता नहीं होती। रॉबिन्स का यह दावा अभी भी कुछ-कुछ आश्चर्य में डालने वाला है कि अर्थशास्त्र एक विशुद्ध सिद्धांत है और अभी भी एक प्रत्यक्ष विज्ञान है। अर्थशास्त्र के लिए प्रत्यक्षवाद का उसका दावा आर्थिक नियमों के मूल्य स्वतंत्र होने के बारे में बल देने मात्र पर आधारित है। उसका तर्क था कि अर्थशास्त्र में नैतिक अनुचिंतन के लिए कोई स्थान नहीं है और उस दृष्टि से भी यह एक विशुद्ध सिद्धांत है।

अर्थशास्त्र को 'विशुद्ध सिद्धांत' अथवा विषयनिष्ठावादी दर्जा दिए जाने के रॉबिन्स के दावे के कारण ही उसके विरुद्ध तीखी आलोचना, विशेष रूप से हचीसन की ओर से हुई। 'विशुद्ध सिद्धांत की प्रतिज्ञप्तियों की रिक्तता' ही आलोचना का बिंदु है। हचीसन ने जोर देकर कहा कि यदि अर्थशास्त्र को एक प्रत्यक्ष विज्ञान कहा जाता है तो यह परीक्षण योग्य होना चाहिए। अन्यथा यह एक 'मिथ्या विज्ञान' होकर समाप्त हो जाएगा। **दूसरा,** 'पूर्ण अपेक्षाओं' की मान्यता आधारहीन है तथा इसलिए विवेकशीलता का अभ्युपगम अयथार्थवादी है। **तीसरे,** सभी अभ्युपगमों को पूर्व सत्य मान लिए जाने का दावा करने मात्र की बजाय अर्थशास्त्र में इन्द्रियानुभविक तकनीकों का प्रयोग और अधिक किए जाने की आवश्यकता है। **अंतिम,** मौलिक अभ्युपगमों की प्राप्ति हेतु एक आधार के रूप में हचीसन ने 'मनोवैज्ञानिक–विधियों (अथवा अंतर्निरक्षण) को अपनाने पर बल दिया।

4.4 हचीसन एवं अर्थशास्त्र में तार्किक इन्द्रियानुभविकता

टेरेन्स हचीसन की कृति *दी सिग्नीफिकेन्स एण्ड बेसिक पॉस्च्युलेट्स ऑफ इकनॉमिक थ्योरी* (1938) बीसवीं शताब्दी के आर्थिक प्रणालीतंत्र में सुस्पष्ट तौर पर मोड़ का एक बिंदु सिद्ध हुई तथा इसने अर्थशास्त्र के प्रयोग (Practice) हेतु सुस्पष्ट तार्किक प्रत्यक्षवाद के लिए एक आधार तैयार किया। हचीसन ने अपनी पुस्तक में आधुनिक आर्थिक सिद्धांत का आधार तैयार करने के लिए खोज का मार्ग प्रशस्त किया। उनका कहना है कि अर्थशास्त्र एक विज्ञान है इसीलिए इसे तथ्यों से सरोकार रखना चाहिए, अन्यथा कोई इसे 'छद्म विज्ञान' समझने लगेगा। उनके अनुसार विज्ञान को इन्द्रियानुभविक प्रतिज्ञप्तियों के अलावा उनकी परीक्षणीयता बौद्धिक दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

हचीसन के अनुसार, विज्ञान में ऐसे कथन शामिल होते हैं जो या तो इन्द्रियानुभविक अवलोकनों द्वारा मिथ्यापनीय समझे जाते हैं या नहीं। जो मिथ्यापनीय नहीं होते वे (Tautology) पुनरुक्तियाँ होती हैं और इस तरह इन्द्रियानुभविक सामग्री से बाहर हो जाते हैं। विशुद्ध सिद्धांत की प्रतिज्ञप्तियों की किसी अनुभवजन्य सामग्री न होने का प्रमुख कारण यह है कि वे निगमनात्मक व्याख्या के रूप में दिखाये जाते हैं। अर्थशास्त्र में, यदि 'अन्य बातें पूर्ववत रहें तो' वाक्यांश इन्द्रियानुभविक सामग्री छीन लेता है, 'अन्य बातें पूर्ववत रहें' वाक्यांश

का अनुत्तरदायी तरीके से प्रयोग सूक्ष्म आर्थिक सिद्धांत को प्रभावी तरीके से अमिथ्यापनीय बना देता है।

हचीसन ने आर्थिक सिद्धांत के औपचारिक ढाँचे का परीक्षण किया जिसमें आधारभूत अभ्युपगमों (Postulates) से निकाली गई श्रृंखलाबद्ध विषय सामग्री होती है। ये निगमन प्रकृति से विश्लेषणात्मक हैं। ये विश्लेषणात्मक कथन बिना किसी इन्द्रियानुभविक सामग्री के तार्किक कथन हैं। इस प्रकार, विशुद्ध आर्थिक सिद्धांत रिक्त हैं और इस तरह और अधिक इन्द्रियानुभविक सामग्री की आवश्यकता है। हचीसन ने परीक्षणीयता की आवश्यकता, यहाँ तक कि आधारभूत अभ्युपगमों के मिथ्यापनीय परीक्षणों पर बल दिया। बाद में, अर्थशास्त्र में प्रामाणिकता हेतु न केवल सिद्धांत, बल्कि मान्यताओं के परीक्षण के उदाहरणों ने बहस को अधिक व्यापक बना दिया। लेकिन तात्कालिक परिणाम हचीसन को एक 'परा-इन्द्रियानुभववादी' बना देने के रूप में परिलक्षित हुआ।

आर्थिक सिद्धांत के मौलिक सामान्यीकरण की विश्लेषणीयता स्थापित करने तथा अर्थशास्त्रियों को विशुद्ध सिद्धांत से अलग कर देने का हचीसन का प्रयास कोई बहुत अधिक सफल नहीं हुआ। लेकिन अर्थशास्त्र में प्रस्तावों को बड़े पैमाने पर परीक्षण योग्य या मिथ्यापनीय रूप में प्रस्तावित करने; अर्थशास्त्र के विभिन्न पहलुओं की इन्द्रियानुभवी खोज को बढ़ाने, तथा अपनी मनोवैज्ञानिक विधि को अर्थशास्त्रियों द्वारा परित्याग करने के उसके प्रस्ताव को अर्थशास्त्रियों के स्तर पर सार्वभौमिक स्वीकृति प्राप्त हुई।

हचीसन के योगदान से संबंधित एक रोचक पहलू सिद्धांत या प्राक्कल्पना के साथ-साथ मान्यताओं के परीक्षण किए जाने के मुद्दे से संबंधित है। इसने हचीसन और फिट्ज मैकलप के बीच बहस उत्पन्न कर दी। मैकलप का विश्वास है कि केवल निगमन की गयी या 'निचले स्तर' की प्राक्कल्पनाओं की 'जाँच' की आवश्यकता होती है। वह यह भी बताते हें कि इनकी जाँच किस प्रकार की जानी चाहिए। जहाँ हचीसन सिद्धांत के प्रत्येक कथन के परीक्षण की आवश्यकता नहीं समझते, लेकिन वे इस बात पर जोर देते हैं कि प्रत्येक कथन परीक्षण योग्य हो तथा यह भी पता होना चाहिए कि परीक्षण किस प्रकार किया जाना चाहिए। हचीसन आगे कहते हैं कि अर्थशास्त्र के व्यवहारवादी अभ्युपगम आर्थिक अभिकर्ताओं के वास्तविक अवलोकित तथा सांख्यिकीय रूप से अभिलेखित व्यवहार के रूप में परिलक्षित होते हैं। मैकलप इस प्रकार के किसी संगत उपागम की आवश्यकता महसूस नहीं करता। अधिकतम करने के व्यवहार की विवेकशील मान्यता निर्णायक व्यवहारवादी अभ्युपगम है। इस मामले में मैकलप अधिक सही है कि उसकी मान्यताओं के प्रत्यक्ष परीक्षण की आवश्यकता नहीं है जैसाकि हचीसन चाहते थे, बल्कि अप्रत्यक्ष परीक्षण ही पर्याप्त होगा। हचीसन के योगदान ने मान्यताओं का परीक्षण किए जाने की बहस की और अधिक बल दिया। मिल्टन फ्रीडमैन का निष्पक्ष योगदान सुझाव देता है कि मान्यताओं के परीक्षण का मुद्दा अपने आप में कोई बहुत बड़ा मुद्दा नहीं था। तथापि इस प्रकार की प्रतिज्ञप्ति ने और अधिक विवाद की स्थिति पैदा कर दी जैसाकि अगले खंड में देखने को मिलेगा।

4.5 मिल्टन फ्रीडमैन और अर्थशास्त्र में करणवाद

मिल्टन फ्रीडमैन की पुस्तक *'ऐसेज इन पाज़िटिव इकनॉमिक्स* (1953)' में उसका एक प्रमुख लेख 'दी मेथेडोलोजी ऑफ पॉज़िटिव इकनॉमिक्स'' अर्थशास्त्र में शोध पद्धतीय लेखन में अब तक ज्ञात सामग्रियों में से सर्वश्रेष्ठ है। उनके निबंध में बताई गई शोध पद्धतीय विधियाँ अनेक अर्थशास्त्रियों द्वारा अपनायी गयीं; भले ही उनमें बड़े पैमाने पर विवाद ही क्यों न रहा हो। काल्डवेल ने ठीक ही कहा है, प्रत्यक्ष अर्थशास्त्र की अध्ययनविधि के आधार के रूप में

व्याख्या के कतिपय भावों को आगे बढ़ाने में मिल्टन फ्रीडमैन के विचार उल्लेखनीय रूप से महत्त्वपूर्ण थे। आलोचना के कतिपय बड़े बिंदुओं सहित मिल्टन फ्रीडमैन के योगदान की व्याख्या आगे की जाएगी।

मिल्टन फ्रीडमैन ने स्पष्ट कर दिया कि उसके निबंध का उद्देश्य नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के दो स्तंभों – (1) अधिकतम करने के व्यवहार, तथा (2) पूर्ण प्रतियोगिता का प्रतिरूप – की आलोचना का जवाब देना है। उसने प्रत्यक्षवाद के अपने स्वयं के विचार द्वारा नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के शोधपद्धतीय आधार को स्थापित किया। आगे चलकर इसे 'कारणवाद' (Instrumentalism) के नाम से ख्याति मिली।

4.5.1 विज्ञान का लक्ष्य

मिल्टन फ्रीडमैन के अनुसार प्रत्यक्ष विज्ञान का अंतिम लक्ष्य ऐसे 'सिद्धांत' या 'प्राक्कल्पना' विकसित करना है जो घटना के बारे में सही तथा अर्थपूर्ण भविष्यवाणी कर सकें। सिद्धांत या प्राक्कल्पना को स्वीकार्यता की तीन कसौटियाँ हैं :

1) कि सिद्धांत/प्राक्कल्पना तार्किक दृष्टि से सुसंगत हो एवं इसमें ऐसे संवर्ग सम्मिलित हों जिनके अर्थपूर्ण इन्द्रियानुभविक प्रतिपक्षी हों;
2) कि इसमें ऐसी 'मौलिक प्राक्कल्पनाएँ' हों जो परीक्षण योग्य हों; तथा
3) कि किसी प्राक्कल्पना की सत्यता का सार्थक परीक्षण केवल इसके अनुभवों के साथ इसकी भविष्यवाणियों से इसकी तुलना है।

आगे, जब अनंत संख्या में प्राक्कल्पनाएँ सामान्यतः अनंत संख्या में विद्यमान तथ्यों के अवलोकित समुच्चयों के साथ संगत हों तो सरलता और लाभदायिकता जैसी अन्य कसौटियों के आधार पर प्राक्कल्पना प्रतिस्पर्द्धी प्राक्कल्पनाओं में से छाँटी जा सकती है।

4.5.2 सिद्धांत के महत्त्व एवं मान्यताओं के 'यथार्थवाद' के बीच संबंध

फ्रीडमैन ऐसे विचारकों के कटु आलोचक हैं जो किसी सिद्धांत की भविष्यवाणी करने की क्षमता का परीक्षण करने के बजाय, 'उनकी मान्यताओं के यथार्थवाद' से सिद्धांत का मूल्यांकन करने का प्रयास करते हैं। फ्रीडमैन के लिए अयथार्थवादी मान्यताओं से युक्त किसी सिद्धांत की निन्दा किया जाना हास्यास्पद है। वह यह दर्शाने का प्रयास करते हैं कि अधिकांश महत्त्वपूर्ण सिद्धांत वास्तविक तौर पर व्याख्यात्मक रूप से गलत मान्यताओं पर आधारित होते हैं। उन्होंने देखा कि, *''सत्य रूप से महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक प्राक्कल्पनाओं में भी 'मान्यताएँ' होती हैं जो यथार्थ का गलत ढंग से व्याख्यात्मक प्रतिनिधित्व करती हैं और सामान्य रूप से, सिद्धांत जितना ही अधिक सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण होगा, उसकी मान्यताएँ उतनी ही अधिक अयथार्थवादी होंगी।''*

मान्यताओं के यथार्थवाद का इसके सिवाय और कोई महत्त्व नहीं कि जब कतिपय प्राक्कल्पनाएँ मान्यताओं से व्युत्पन्न की जाती हैं और जब कोई परीक्षण उपलब्ध नहीं होता, यथार्थपूर्व व्याख्याएँ व्यवस्थित होती हैं। इन दो अपवादों को छोड़कर, निम्नलिखित मान्याताओं के यथार्थवाद का कोई महत्त्व नहीं है।

1) ऐसा माना जाता है कि सिद्धांत अमूर्तीकरण (Abstraction) द्वारा जटिल यथार्थ को सरलीकरण की ओर ले जाया जा सकता है। यथार्थवाद एवं अमूर्तीकरण के बीच प्रतिलोमानुपाती संबंध होता है। यथार्थवाद पर जितना अधिक बल दिया जाता है, व्याख्या उतनी ही अधिक अमूर्त एवं जटिल होती जाती है।

2) मान्यताओं एवं तथ्यों के बीच विसंगतियों की जानकारी न होने से, कोई व्यक्ति मान्यताओं के यथार्थवाद को महत्त्वहीन समझ सकता है। फ्रीडमैन ने गिरती हुई वस्तुओं के बारे में गैलीलियो के उदाहरण को उद्धृत करते हुए लिखा है – 'यदि निर्वात (Vaccum) में कोई वस्तु पृथ्वी की ओर गिरती है तो उसका तात्कालिक त्वरण $s = 1/2\ g\ t^2$ पर स्थिर होता है। निर्वात के यथार्थवाद के परीक्षण की कोई आवश्यकता नहीं है। चूंकि भविष्यवादी सत्य है, तो मान्यता को भी सत्य मान लिया जाना चाहिए। आर्थिक सिद्धांतों की ओर मुड़ते हुए फ्रीडमैन 'बिलियर्ड बाल खिलाड़ी' का उदाहरण देते हैं। जैसे ही गेंद पाउच में पहुँचती है, वैसे ही कोई मान सकता है कि मानो खिलाड़ी को समय और गति के सभी नियमों की जानकारी थी। इसी उदाहरण को लाभ को अधिकतम करने पर विस्तारित करते हुए फ्रीडमैन आगे कहते हैं, ''व्यवहार के बारे में जाते हुए मानो कि वे विवेकशील व्यवहार करते हुए अपने अपेक्षित प्रतिफल को अधिकतम करना चाहते थे और उनको अपने प्रयासों में सफलता के लिए आवश्यक सभी आंकड़ों की जानकारी थी।''

3) निहितार्थों के अनायोजित (Undersigned) वर्गों से बचा जा सकता है मानो कि वे मान्यताएँ हों।

सभी प्रत्यक्ष विज्ञानों में अध्ययन विधि की एकता पर बल देते हुए फ्रीडमैन अपने निबंध को समाप्त करते हैं। उसके लिए प्राकृतिक विज्ञानों एवं सामाजिक विज्ञानों में कोई प्रणाली तंत्रीय भेद नहीं है। वह अर्थशास्त्र को भौतिक विज्ञानों की भाँति ही 'वस्तुनिष्ठ' मानता है। फ्रीडमैन के प्रमुख निष्कर्ष हैं :

1) सिद्धांतों की सत्यता हेतु मान्यताओं का यथार्थवाद 'बड़े रूप से' अप्रासंगिक है। सही भविष्यवाणी करने के लिए उनका (सिद्धांतों) का मूल्यांकन उनके करणात्मक मूल्य (instrumental value) के रूप में ही किया जाना चाहिए।

2) श्रेष्ठ आर्थिक सिद्धांत का भविष्यवाणी करने का उत्कृष्ट रिकार्ड होता है जैसा कि विशिष्ट समस्याओं और उसके अनगिनत अनुप्रयोगों से पता चल जाता है।

3) समय के साथ प्रतिस्पर्द्धा की गत्यात्मकता इस उल्लेखनीय उपलब्धि का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है।

4.5.3 फ्रीडमैन के करणवाद (Instrumentalism) का आलोचनात्मक मूल्यांकन

मिल्टन फ्रीडमैन के शोध पद्धतीय उपागम की चारों ओर से बड़ी आलोचना हुई। सबसे प्रखर आलोचना का संबंध इस प्रतिज्ञप्ति से है कि मान्यताओं के यथार्थवाद से कोई फर्क नहीं पड़ता। फ्रीडमैन के इस विचार को कि न केवल मान्यताओं के यथार्थवाद की कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि 'सामान्य रूप में, सिद्धांत जितना अधिक सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण होगा, मान्यताएँ उतनी ही अधिक अवास्तविक होंगी' को सैम्युल्सन ने 'F-Twist (फ्रीडमैन-मोड़) स्वरूप के रूप में भड़कीले अतिश्योक्तिपूर्ण कथन (Flamboyant Exaggeration) की संज्ञा दी है। एक बात तो यह है कि सभी मान्यताएँ यथार्थवाद से दूर हटती जाती हैं तथा सिद्धांत भविष्यवाणियों के निकट हैं। यहाँ तक कि मैकलप, एल. ओसोलैण्ड एवं नागेल जो कि सामान्य रूप से फ्रीडमैन की अध्ययन विधि से सहमत होते हुए उसका बचाव करते थे, इस बात पर बल दिया कि यथार्थवाद द्वितीय क्रम की मान्यता हो सकती है।

ऐसा बताया जाता है कि यह बिल्कुल भी जरूरी नहीं कि मान्यताओं के बारे में प्रत्यक्ष साक्ष्य किसी सिद्धांत का परीक्षण किए जाने की तुलना में कठिन ही हों। मान्यताओं का परीक्षण

सिद्धांत के बारे में और अधिक महत्त्वपूर्ण जानकारी दे सकता है। कॉल्डविल ने बताया कि दार्शनिक रूप से, व्याख्या की बजाए भविष्यवाणी पर फ्रीडमैन द्वारा बल दिए जाने का परिणाम कारण-कार्य-संबंध (Casuation) के रूप में न होकर सहसंबंध के रूप में हो सकता है अर्थात् यह 'सिद्धांत के बिना मापन' के रूप में परिलक्षित हो सकता है। ब्लॉग ने बताया कि मात्र एकदम सही भविष्यवाणियाँ ही किसी सिद्धांत की सत्यता का प्रासंगिक परीक्षण नहीं हैं। और यह कि वास्तविक तथा नकली सहसंबंधों के बीच भेद कर पाना असंभव है। इतना ही नहीं, सिद्धांतों के प्रति फ्रीडमैन का करणात्मक व्यवहार (Attitude) सिद्धांतों के 'सत्य मूल्य' की उपेक्षा करता है, जिस पर विज्ञान के अनेक विचारक बल देना चाहेंगे।

बोध प्रश्न 2

1) एल. रॉबिन्स के शोध पद्धतीय दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

2) तार्किक/इन्द्रियानुभववाद के क्षेत्र में हचीसन का योगदान किस सीमा तक महत्त्वपूर्ण रहा है?

.....

.....

.....

.....

3) सिद्धांत या मान्यताओं की स्वीकार्यता हेतु मिल्टन फ्रीडमैन द्वारा कौन-सी कसौटी निर्धारित की गयी।

.....

.....

.....

.....

.....

4.6 पॉल सैम्युल्सन एवं संक्रियावाद

यद्यपि पॉल सैम्युल्सन का शोध पद्धतीय योगदान, आर्थिक सिद्धांत के क्षेत्र में उनके मौलिक कार्य से तुलनीय नहीं है, तथापि तार्किक इन्द्रियानुभववाद की ओर अर्थशास्त्र के झुकाव के बारे में कतिपय अंतर्दृष्टि (insights) अवश्य ही प्रदान करता है। सैम्युल्सन अनुभव निरपेक्षवाद (Apriorism) के विरुद्ध नहीं हैं। वह हचीसन प्रकार के तार्किक इन्द्रियानुभववाद के प्रति अधिक आकर्षित हैं। वह 'विवेकशील पुनर्निर्माण' के पोपर की विविधता के प्रभाव को भी दर्शाता है। आर्थिक अध्ययनविधि के उनके योगदान को उनके द्वारा प्रतिपादित दो सिद्धांतों के रूप में देखा जाना चाहिए। इनमें से एक को 'संक्रियावाद' (operationalism) तथा दूसरे को 'वर्णनात्मकवाद' (Descriptivism) के रूप में व्यक्त किया जाता है। इन दोनों सिद्धांतों की व्याख्या आगे की गयी है।

4.6.1 संक्रियावाद

पॉल सेम्युल्सन के अनुसार, अर्थशास्त्री को संक्रियावाद दृष्टि से अर्थपूर्ण प्रमेयों की खोज करनी चाहिए। रणनीतिक दृष्टि से सिद्धांत अवलोकनीय तथा काट-य (Refutable) इन्द्रियानुभव नियमितताओं के सरलीकृत विवरण होते हैं। सेम्युल्सन फ्रीडमैन द्वारा मान्यताओं के यथार्थवाद पर एफ-मोड़ (F-Twist) की आलोचना के साथ अपनी विवेचना प्रारंभ करते हैं। तथा शोध पद्धतीय सुस्पष्टता की आवश्यकता पर बल देते हैं। उसने शोध पद्धतीय संगतता के आधार के रूप में तार्किक तुल्यता को प्रस्तावित किया। तार्किक तुल्यता (Equivalence) के अनुसार सिद्धांत मान्यताओं एवं निष्कर्षों के बराबर (समकक्ष) कथन मात्र हैं। अर्थात् A≡B≡C, जहाँ कि A को मान्यताओं के रूप में; B को 'सिद्धांत' के रूप में तथा C को परिणाम (cousequences) या भविष्यवाणियों के रूप में परिभाषित किया जाता है।

सिद्धांत (B) में 'स्वयंसिद्ध कथनों' (axioms) अभ्युपगमों या प्राक्कल्पनाओं का एक समुच्चय शामिल है जो अवलोकनीय यथार्थ के बारे में निरूपित करता है। सिद्धांत रूप से यह समुच्चय अवलोकनों द्वारा या तो स्वीकार किए जाने योग्य होता है या नकार दिए जाने योग्य। अंतर्निहित (implied) होता है। इसी प्रकार सिद्धांत में मान्यताओं (assumptions) का भी समुच्चय होता है जो तार्किक ढंग से सिद्धांत को समाविष्ट (employ) करता है। A, B, C में से किसी भी एक का 'यथार्थवाद', 'तथ्यात्मक सत्यता', 'इन्द्रियानुभव सत्यता' अथवा 'सत्य', अन्य दोनों द्वारा भी समाहित होता है। एफ-मोड़ (F-Twist) के बारे में उन्होंने बताया कि यह कथन एक-दूसरे के विपरीत हैं कि सभी परिणाम (C) तर्कसंगत (valid) हैं तथा सिद्धांत (B) व मान्यताएँ (A) तर्कसंगत नहीं हैं। द्वितीय, यह बताए रखना मूर्खता है कि यदि कुछ मामलों में कुछ परिणाम (C) तर्कसंगत हैं तथा सिद्धांत (B) व मान्यताएँ (A) महत्त्वपूर्ण होते हुए भी तर्कसंगत नहीं हैं। परिणामी समुच्चय के अमान्य (invalid) भाग से संबंधित सिद्धांत समुच्चय तथा मान्यताओं के समुच्चय को हटा दिया जाना चाहिए।

4.6.2 वर्णनात्मकवाद

व्याख्या के प्रति सैम्युल्सन का दृष्टिकोण कतिपय उन्नत (exalted) है, जिसे वह विज्ञान के सामान्य स्वरूप (notion) से अलग मानते हैं। सैम्युल्सन ने पाया 'वैज्ञानिक कभी भी सिद्धांत या किसी अन्य व्यवहार की व्याख्या' नहीं करते। प्रत्येक विवरण जिसका 'गहरी व्याख्या' द्वारा अधिक्रमण हो गया है, किसी अन्य विवरण द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है। एक व्याख्या, जो विधिमान्य तरीके से विज्ञान में प्रयुक्त की जाती है, विवरण का एक बेहतर स्वरूप है; न कि ऐसा कुछ जो अंततः विवरण से परे चला जाता हो। विवरण की इस विस्तृत व्याख्या तथा उस पर जोर दिए जाने से सैम्युल्सन के उपागम को 'वर्णनात्मकवाद' शीर्षक मिला। केवल विवरण ही क्यों? **प्रथम,** एक सिद्धांत अवलोकनीय अनुभव का विवरण मात्र है, इन्द्रियानुभव यथार्थ का आसान स्मरणकारी प्रतिनिधित्व है। **द्वितीय,** ज्ञान अथवा जानकारी में अनिवार्यतः अवलोकनीय प्रतिवेदन शामिल होते हैं। अवलोकनीय भाषा में व्यक्त किया जा सकने वाला सिद्धांत ऐसा न हो सकने वाले सिद्धांतों से श्रेष्ठ है। व्याख्याएँ तो अंतिम हैं हीं। अनुभव निरपेक्षवाद से बचा जाना चाहिए। इसलिए सिद्धांतों को अवलोकनीय भाषा में व्यक्त किया जाना चाहिए। विज्ञान में सभी ज्ञात सिद्धांत अवलोकनीय कथनों, अर्थात् आधारभूत कथनों के रूप में व्यक्त किए जाने योग्य हैं।

सैम्युल्सन की सर्वाधिक आलोचना इस बात के लिए की जाती है कि शोध पद्धतीय व्यवस्था के बारे में उन्होंने जो कुछ भी बताया उसका पालन स्वयं नहीं किया। अर्थात् अर्थशास्त्र की अध्ययन विधि के बारे में सैम्युल्सन की कथनी और करनी में अंतर है। 'साधन कीमत समानीकरण' पर सैम्युल्सन के प्रसिद्ध कार्य को उद्धृत करते हुए मैकलप ने सैम्युल्सन पर

'संक्रियात्मक ढंग से प्रमेय' की उत्पत्ति हेतु स्वयं अपने ही मानकों को न अपनाने का आरोप लगाया। इतना ही नहीं अवास्तविक मान्यताओं के आधार पर सिद्धांतों को व्युत्पन्न किए जाने की सैल्युल्सन की तकनीक भी आलोचनाओं के घेरे में है। एक अन्य प्रमुख आलोचना स्टेनले वॉग की ओर से सैम्युल्सन के प्रकट अधिमान सिद्धांत के शोध पद्धतीय आधारों के विरुद्ध है।

4.7 सिद्धान्त-मान्यताओं पर अर्थशास्त्र में बहस – एक विहंगम दृष्टि

आधुनिक विज्ञान की उल्लेखनीय प्रगति का श्रेय काफी बड़े पैमाने पर सिद्धांतों के रूप में व्यक्त किए जाने वाले निगमन से संबंधित कथनों के विकास को दिया जाता है। विज्ञान में सिद्धांतों ने स्पष्टता तथा क्रम स्थापित किया, सामान्यीकरण के क्षेत्र का विस्तार किया तथा भविष्यवाणी करने में असाधारण सफलता हासिल की। हालांकि, आर्थिक सिद्धांतों को भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों की भाँति सम्मान प्राप्त नहीं है। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के काल से ही आर्थिक सिद्धांत की मान्यताओं के अयथार्थवाद की आलोचना की जाती रही है। समय-समय पर तार्किक ढंग से इन आलोचनाओं के उत्तर भी दिए जाते रहे हैं। जैक मैलिट्स (1965) ने सिद्धांत-मान्यताएँ विवाद पर अपने प्रतिष्ठित शोध-पत्र में बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के बाद से आर्थिक सिद्धांतों-मान्यताओं की आलोचना से जुड़े मुद्दों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। यहाँ एक संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत किया जा सकता है, जो अर्थशास्त्र में विद्यमान व्याख्या की समस्या को समझने में हमारी सहायता करेगा।

1880-1920 के दौरान आर्थिक सिद्धांत के समर्थकों ने समझौतावादी मध्यमार्ग अपनाया। वे इस बात से सहमत थे कि आर्थिक सिद्धांत में झूठी मान्यताएँ अपनायी गयीं तथा यह भी स्वीकार किया कि मूल्य सिद्धांत काफी बड़ी सीमा तक मान्यताओं तथा तथ्यों के बीच समझौते के स्तर पर निर्भर करता है। इतना होते हुए भी उन्होंने जोर दिया, **प्रथम,** कि मान्यताएँ घटनाओं के संगत होती हैं। **द्वितीय,** वास्तविकता की जटिलता को देखते हुए सरलता के लिए परिशुद्धता का कुछ त्याग औचित्यपूर्ण है। इतना ही नहीं उन्होंने प्रतिरक्षात्मक उपायों के साथ मान्यताओं के सरलीकरण को जोड़ने के महत्त्व पर जोर दिया:

1) अर्थशास्त्र के सभी क्षेत्रों में और अधिक आगमनात्मक अध्ययन किए जाने की आवश्यकता;

2) आर्थिक सिद्धांत के अनुप्रयोग से पहले बृहत् मान्यताओं एवं तथ्यों के बीच उचित निकटता का निर्धारण;

3) किसी विशिष्ट मामले के लिए उपयुक्त मान्यताओं में परिवर्तन।

1920 के दशक तथा 1930 के दशक के दौरान अर्थशास्त्र की विशुद्ध तार्किक शाखा के उल्लेखनीय विकास के साथ, आर्थिक सिद्धांत के समर्थकों ने अपनी चमक खो दी। आर्थिक सिद्धांतों को अपनाने वाले अर्थशास्त्रियों ने रॉबिन्स तथा आस्ट्रियन सम्प्रदाय की सहायता से अनुभव निरपेक्षवाद को अपना लिया।

1948–1953 के बीच, जैसा कि हमने पहले देखा, मिल्टन फ्रीडमैन ने एक ऐसा व्यवहार विकसित करने की तार्किक बुनियाद प्रस्तुत करने का प्रयास किया कि मान्यताओं का यथार्थवाद वास्तविक नहीं है। यह एक द्वितीयक मामला है। अर्थशास्त्र में झूठी मान्यताएँ विकलांग के रूप में परिलक्षित नहीं होती। सरल रूप में मान्यताओं को केवल कार्य करना चाहिए और विश्वसनीय परिणाम देने चाहिए। यह आलोचना कि अर्थशास्त्र में मान्यताएँ तथ्यों

से संगत नहीं होतीं, इस बिंदु के अतिरिक्त है। 1955 में मैकलप ने फ्रीडमैन के साथ हाथ मिलाया तथा विज्ञान के दर्शन तथा राजनीतिक अर्थव्यवस्था की समग्र परम्परा में उसी के अनुरूप विशेषज्ञ होने का दावा प्रस्तुत किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अर्थशास्त्र में अभी भी शोध पद्धति की अपर्याप्तता बनी हुई है। अर्थशास्त्र की व्याख्या में इस शोध पद्धति के कारणों की विवेचना अगले खंड में की गयी है।

4.8 अर्थशास्त्र में व्याख्या की विषमजातीयता पर अमर्त्य सेन

उपरोक्त से यह स्पष्ट हो गया है कि अर्थशास्त्र में व्याख्या सन्तोषजनक स्थिति के आस-पास कहीं नहीं है। समकालीन आर्थिक अध्ययन की वृहद् आधारित आलोचना में अमर्त्य सेन अर्थशास्त्र की विषयवस्तु में विषमजातीयता (Heterogeneity) की ओर ध्यान खींचते हैं। अर्थशास्त्र में विद्यमान सभी विविध मुद्दों और चिंताओं के लिए किसी एकल विधि के बारे में सोचने का प्रयास सुनिश्चित तौर पर आज हमारे द्वारा अनुभव किए जा रहे असन्तोष का कारण तो बनेगा ही। प्रो. सेन अर्थशास्त्र शोध पद्धति के विविध उपागमों हेतु दलील देते हैं।

4.8.1 अर्थशास्त्र में पदार्थ एवं विधियों की विषमजातीयता

सेन के अनुसार, एक विषय के रूप में अर्थशास्त्र का संबंध विभिन्न प्रकार की समस्याओं से है। विषय में शोध पद्धतियों के (Methodological) मुद्दों पर उचित पकड़ बनाए रखने के लिए अर्थशास्त्र के विषयों की विविधता को ध्यान में रखा जाना चाहिए। अर्थशास्त्र का विषय पारस्परिक रूप से संबंधित तीन विविध क्षेत्रों को अपने में शामिल किए हुए है।

1) भविष्य के बारे में भविष्यवाणी करना तथा इसके कारण के रूप में पिछली घटनाओं की व्याख्या करना;

2) भूतकाल एवं वर्तमान काल में स्थितियों तथा घटनाओं के यथोचित विवरणों का चुनाव करना;

3) राज्यों, संस्थाओं एवं नीतियों का आदर्श (Normative) मूल्यांकन करना।

ये तीनों विषय आपस में संबंधित हैं लेकिन प्रत्येक के लिए अलग-अलग शोध पद्धतीय उपागम की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ, वैज्ञानिक व्याख्या की विधि जो भविष्यवाणी पर जोर देती है, का संबंध केवल पहले वर्ग की समस्याओं से है। अर्थशास्त्र की अध्ययन विधि को अन्य वर्गों की समस्याओं के विचारार्थ पर्याप्त विविधता लानी होगी।

4.8.3 परीक्षण एवं जाँच

परीक्षण एवं पुष्टीकरण (Testing and Verification) कारण-कार्य संबंधों एवं भविष्यवाणियाँ करने से संबंधित होने के कारण अनेक प्रकार के आर्थिक विश्लेषण हेतु महत्त्वपूर्ण हैं। लेकिन ये सभी आर्थिक सिद्धांतों के लिए उपयुक्त नहीं हैं। उदाहरणार्थ मूल्यांकन करने जैसे कार्य परीक्षण के लिए नहीं खुले हैं। कारण कार्य प्राक्कल्पना के आधार पर आदर्श मूल्यांकन भविष्यवाणी करने से बिल्कुल अलग विषय है। इसी प्रकार, कुछ विवरणात्मक प्रतिज्ञप्तियों में भविष्यवाणी करने की क्षमता नहीं होती, और इन तक पहुँचने के लिए 'परीक्षण' एक गलत कार्य होगा। जहाँ तक कारण-कार्य सिद्धांतों का संबंध है, इन्द्रियानुभव सूचना के साथ उनके परीक्षण की आवश्यकता को अर्थशास्त्रियों द्वारा सिद्धांततः स्वीकार किया जाता है। अवधारणात्मक एवं विश्लेषणात्मक मुद्दों को अधिक मौलिक रूप से समझ लिए जाने की आवश्यकता है कि इसमें किस प्रकार का संबंध शामिल है। इस स्तर पर विश्लेषण परीक्षण एवं जाँच के लिए नहीं बना है। हाँ इतना अवश्य है कि किसी को इस स्तर पर ही समाप्त नहीं कर देना चाहिए तथा अगले चरण की ओर बढ़ना चाहिए, जहाँ परीक्षण संभव है।

4.8.3 मूल्य निर्णयन एवं कल्याणकारी अर्थशास्त्र

सेन ने इस ओर ध्यान खींचा कि रॉबिन्स के बाद से मूल्य निर्णय अर्थशास्त्र की परिधि से बाहर हो गये थे। ''अर्थशास्त्र को 'मूल्य स्वतंत्र' रखने का निर्णय एक प्रकार से कल्याणवादी अर्थशास्त्र के विषय के विरुद्ध आक्रामक रुख धारण करने जैसा था।'' कल्याणवादी अर्थशास्त्र को आज भी महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में स्वीकार किया जाता है और इस क्षेत्र में अर्थशास्त्र को मूल्य-स्वतंत्र रखने का ऐसा कोई अर्थ नहीं होगा जिसकी प्रशंसा की जाए। कल्याणवादी अर्थशास्त्र का मूल्यांकन करने में विवरणात्मक विधियाँ (Descriptive methods) अनुपचारणीय (indespansible) हो जाती हैं।

4.8.4 औपचारीकरण एवं गणित

औपचारिक विवेचना या कार्यकरण में तथा अनेक आर्थिक प्रतिज्ञप्तियों को व्यवस्थित किए जाने में गणित एक सीमा तक सहायता करता है। हालांकि गणित की औपचारिक भाषा की कुछ गंभीर सीमाएँ हैं। सभी आर्थिक प्रतिज्ञप्तियों को गणितीय रूप तक छोटा नहीं किया जा सकता। संतुलन का अभाव प्रायः अर्थशास्त्र के अति-औपचारिकरण के रूप में परिलक्षित हुआ है। कतिपय आर्थिक प्रतिज्ञप्तियों की व्याख्या में अर्थशास्त्र के प्रत्यक्ष तथा सकारात्मक योगदान को स्वीकार करते हुए, यह भी माना जाता है कि अर्थशास्त्र में गणित पर अधिक निर्भरता ने नकारात्मक योगदान के रूप में अन्य विषयों को इससे बाहर छोड़ दिया है। ऐसे अति औपचारीकरण को ठीक किए जाने की आवश्यकता है।

बोध प्रश्न 3

1) तार्किक समानीकरण (equivalence) से आपका क्या आशय है?

.....

.....

.....

.....

2) क्या आप इस बात से सहमत हैं कि अर्थशास्त्र में विभिन्न प्रणालीतंत्रीय उपागमों की आवश्यकता है?

.....

.....

.....

.....

3) आर्थिक प्रतिज्ञप्तियों के व्यवस्थायीकरण में गणित के प्रयोग को किस सीमा तक प्रयुक्त किया जाना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

4.9 सारांश

यह स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र की विषयवस्तु जटिल एवं असमरूप है और इस कारण यह व्याख्या की शोध पद्धति का कोई भी एकल प्रतिरूप गंभीर सीमाओं का सामना करने के लिए बाध्य है। इसके बावजूद प्रतिष्ठित राजनीतिक अर्थशास्त्र के समय से ही इस पेशें में विचारकों की महत्त्वाकांक्षा रही है (जो एक प्रकार के अहंकार (Arrogance) की ओर मुड़ गयी है) कि अन्य भौतिक विज्ञानों की तरह अर्थशास्त्र भी एक विज्ञान है तथा इसे शोध पद्धतीय उपागम के नियमों का स्थायी रूप धारण कर लेना चाहिए। जैसे तार्किक प्रत्यक्षवाद, भले ही तार्किक प्रत्यक्षवाद इसकी अनेक सीमाओं के कारण गंभीर आलोचनाओं का शिकार क्यों न रहा हो।

मुख्य धारा के अर्थशास्त्र इस धुन से बाहर आने में समर्थ नहीं हो सके हैं। ''यह एकल शोध पद्धतीय नियम के बारे में है जो अर्थशास्त्र में 1960 के दशक के प्रारंभ से ही प्रभावशाली रहा है। मुद्दा यह है कि आर्थिक प्रतिरूपों या सिद्धांतों पर पेशेवर अर्थशास्त्रियों द्वारा यदि गंभीरतापूर्वक विचार किया जाना है, तो शोध पद्धतीय आवश्यकता यह है कि उन्हें परीक्षण योग्य दर्शाया जाना चाहिए, विशेष तौर पर तब जबकि किसी सिद्धांत के सफल परीक्षण को उस सिद्धांत की मिथ्यापनीयता के रूप में परिभाषित किया जाता है। परीक्षण योग्य कोई भी सिद्धांत मिथ्यापनीय सिद्धांत है'' (एल. बोलैण्ड, 1989)।

व्याख्या पर खोजपरक कोई भी सामग्री अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों को इस धुन से बाहर आने में सहायता करेगी। ऐसा नहीं है कि हम परीक्षण किए जाने का परित्याग कर रहे हैं लेकिन हमें मूल्यांकन, विवरण पर विचार करने की आदत का परित्याग करना चाहिए और यहाँ तक कि अर्थशास्त्र में ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन सबको प्रयुक्त किए जाने की वकालत के लिए भी कोई स्थान नहीं होना चाहिए। यदि अर्थशास्त्रियों को उनके बीच व्याप्त विरक्ति की बैचेनी से बाहर लाना है तो अर्थशास्त्र की विजातीयता को उपागमों की विविधता की आवश्यकता है।

4.10 शब्दावली

निर्धारणवाद : एक व्यवस्था या अध्ययनविधि की विवेचना हेतु प्रयुक्त एक शब्द जो किसी परिणाम तक पहुँचने के लिए प्रत्यक्ष तौर पर कम या अधिक क्रिया करते हुए घटकों के एकल समुच्चय की दुर्घटना को साधारणतः कम कर देता है।

परिकल्पना / प्राक्कल्पना : प्राक्कल्पना का संबंध ऐसे अनंतिम या तात्कालिक कथन से है जिसका किसी विशिष्ट विज्ञान की विधियों को अपनाकर परीक्षण किया जा सकता है।

इन्द्रियानुभववाद : इन्द्रियानुभववाद को साधारणतया आधुनिक वैज्ञानिक विधि के हृदय के रूप में जाना जाता है कि हमारे सिद्धांत हमारी अंतःप्रज्ञा (intution) अथवा विकास के बजाय विश्व के बारे में हमारे अवलोकनों पर आधारित होने चाहिए; यह कि विशुद्ध निगमन तर्क के बजाय इन्द्रियानुभव अनुसंधान एवं पश्च (posteriori) आगमनात्मक तर्कणा पर आधारित होने चाहिए।

विचारधारा : मानव जीवन या संस्कृति के विषय में क्रमबद्ध आवधारणाओं का आकार दूसरे शोध में किसी व्यक्ति या समूह या संस्कृति की वैचारिक विशिष्टता की विषयवस्तु या तरीका; समन्वित निश्चयात्मक कथन (assertion) सिद्धांत एवं लक्ष्य जो किसी सामाजिक-राजनीतिक कार्यक्रम का निर्माण करते हैं, की अवधारणाओं का एक व्यवस्थित निकाय।

प्रणालीतंत्रीय द्वैतवाद : ज्ञाता को ज्ञात से या वस्तु से विषय को पृथक करने में प्रत्यक्षवादी विश्वास।

प्रणालीतंत्रीय-एकतत्ववाद : द्वैतवाद के कोष्ठीकरण के विपरीत एकतत्ववाद विश्व को सींवन रहित जाली (Seanless Web) के रूप में देखता है। गोल्डनर के तर्क के रूप में, ज्ञाता और ज्ञात के बीच विभाजन से मुक्ति पानी चाहिए।

नियमान्वेषक : सामान्य नियमों के अन्वेषण से संबंधित या सार्वभौमिक नियम के अन्वेषण से संबंधित।

रूपावली : 1800 की शदी की अंतिम अवधि के बाद रूपावली शब्द को किसी वैज्ञानिक विषय या किसी अन्य ज्ञान-मीमांसात्मक (epistemological) संदर्भ में विचारित प्रतिरूप के रूप में व्यक्त किया जाता है।

छद्म विज्ञान : छद्म विज्ञान को ज्ञान या कार्य करने के तरीके के किसी निकाय के रूप में संदर्भित किया जाता है, जो विज्ञान की तरह दिखाई देता है या विज्ञान द्वारा समर्थित होता है लेकिन जिसे विज्ञान के क्षेत्र के बाहर का माना जाता है।

4.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Blaug, Mark (1980); *Methodology of Economics*, Cambridge Univeristy Press, Cambridge.

Caldwell, Bruce (1982); *Beyond Positivism: Economic Methodology in the Twentieth Centrury*, George Allen and Unwin, London.

Friedman, Milton (1953); *Essays in Positive Economics*, University of Chicago Press, Chicago.

Hausman, Daniel M. (1994); *The Philosophy of Economics: An Anthology*, Cambridge University Press, Cambridge, 2nd Edition.

Melitz, Jack (1965); "Friedman and Machlup on the Significance of Testing Economic Assumptions", Journal of Political Economy, pp.37-60.

Sen, Amartya (1989); "*Economic Methodology: Heterogeneity and Relevance*", Social Research, Vol.56, No.2 (Summer 1989), pp. 299-329.

4.12 बोध प्रश्नों के उत्तर या संकेत

बोध प्रश्न 1

1) प्रत्यक्ष, अमूर्त एवं निगमनात्मक को संक्षेप में व्याख्या का प्राक्कल्पनावादी-निगमनात्मक प्रतिरूप कहा जाता है।

2) उपभाग 4.2.4 देखें।

3) शोध पद्धतीय बहुलवाद को विभिन्न विधियों एवं विचारों की स्वीकार्यता के बीच समग्र समझौतीवादी दृष्टिकोण के रूप में संदर्भित किया जाता है जो कि दृष्टिगत वस्तु, किसी मुकाम पर पहुँची खोज का स्तर तथा उपलब्ध सामग्री पर आधारित विविध विधियाँ उचित हैं।

4) उपभाग 3.4.4 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) परीक्षण नैतिक विचार के लिए कोई स्थान न होने, अधिकतम करने के व्यवहार की विवेकशीलता तथा पसंद की एकरूपता की आवश्यकता के बिना विशुद्ध सिद्धांत पर बल देना।

2) सिद्धांत एवं मान्यताओं दोनों पर बल देना।

3) उपभाग 4.5.1 देखें।

4) यह प्रतिज्ञप्ति कि मान्यताओं के यथार्थवाद से कोई फर्क नहीं पड़ता।

बोध प्रश्न 3

1) सिद्धांत मान्यताएँ एवं निष्कर्ष आपस में एक जैसे पुनर्कथन मात्र हैं।

2) भाग 4.8 देखें।

3) उपभाग 4.8.4 देखें।